भारतीय ज्योतिष का आंतरिक संसार

ज्योतिषाचार्य तेजस्कर पाण्डेय

भारतीय ज्योतिष का आंतरिक संसार उपचारात्मक और साधनात्मक पक्ष भी रखता है. ग्रह शांति के उपाय केवल बाह्य कर्मकांड नहीं हैं, बल्कि वे मन और चेतना के परिष्कार के साधन हैं. मंत्रों का जप, दान की भावना, व्रत और तप ङ्क ये सभी व्यक्ति के भीतर सकारात्मक मानसिक और आध्यात्मिक परिवर्तन लाते हैं. रत्न धारण को भी केवल भौतिक उपाय न मानकर, प्रतीकात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव के रूप में देखा गया. इस उपचारात्मक दृष्टि से ज्योतिष आयुर्वेद और योग की समग्र परंपरा से जुड़ जाता है, जहाँ शरीर, मन और आत्मा को एकीकृत रूप में देखा जाता है.

भारतीय ज्योतिष का आंतरिक संसार अत्यंत विस्तृत, गहन और बहुस्तरीय है. यह केवल ग्रहों की स्थिति, नक्षत्रों की गणना अथवा भविष्य कथन की तकनीक तक सीमित न होकर भारतीय सभ्यता के बौद्धिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक विकास का एक समग्र प्रतिबिंब है. भारतीय परंपरा में ज्योतिष को वेदांग कहा गया है, अर्थात् यह वेदों का अंग है, और इस तथ्य से ही इसका आंतरिक महत्व स्पष्ट हो जाता है. वेदों की यज्ञीय परंपरा, कालबोध और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को समझने के लिए ज्योतिष का विकास हुआ, किंतु कालांतर में यह मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष से जुड़ गया. इसका आंतरिक संसार वह क्षेत्र है जहाँ आकाश और आत्मा, काल और कर्म, ग्रह और मनुष्य, तथा नियति और पुरुषार्थ के बीच सूक्ष्म संवाद होता है.

भारतीय ज्योतिष की मूल अवधारणा यह है कि ब्रह्मांड एक जीवंत, चेतन और सुव्यवस्थित तंत्र है. इसमें कोई भी घटना आकस्मिक नहीं है; प्रत्येक परिवर्तन एक निश्चित नियम और लय के अनुसार घटित होता है. यह लय ही ऋत कहलाती है, जो वैदिक चिंतन का मूल है. ज्योतिष इसी ऋत का मानव जीवन में अनुप्रयोग है. आकाशीय पिंडों की गति, उनका परस्पर संबंध और पृथ्वी पर पड़ने वाला उनका प्रभाव ङ्क यह सब उस गहन विश्वास पर आधारित है कि सूक्ष्म और स्थूल, दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं. यही कारण है कि भारतीय ज्योतिष का आंतरिक संसार केवल बाह्य घटनाओं का अध्ययन नहीं करता, बल्कि जीवन के सूक्ष्म कारणों और आंतरिक प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास करता है.

ग्रहों की अवधारणा भारतीय ज्योतिष के आंतरिक संसार का एक केंद्रीय तत्व है. यहाँ ग्रहों को केवल भौतिक पिंड नहीं माना गया, बल्कि चेतन शक्तियों का प्रतीक समझा गया. सूर्य आत्मा, तेज और सत्ता का प्रतीक है; चंद्रमा मन, भावनाओं और संवेदनशीलता का; मंगल ऊर्जा, साहस और संघर्ष का; बुध बुद्धि, संवाद और विवेक का; बृहस्पति ज्ञान, नैतिकता और आध्यात्मिक विस्तार का; शुक्र सौंदर्य, प्रेम और भोग का; तथा शनि अनुशासन, कर्म और न्याय का प्रतिनिधित्व करता है. राहु और केतु को छाया ग्रह मानकर इच्छाओं, भ्रम, वैराग्य और आध्यात्मिक उत्कर्ष से जोड़ा गया. इस प्रतीकात्मक दृष्टि से स्पष्ट होता है कि ज्योतिष का आंतरिक संसार मनुष्य के भीतर स्थित विभिन्न प्रवृत्तियों और शक्तियों का भी अध्ययन करता है.

भारतीय ज्योतिष का आंतरिक संसार काल की दार्शनिक अवधारणा पर आधारित है. काल को यहाँ केवल घड़ी या कैलेंडर की इकाई नहीं माना गया, बल्कि उसे ब्रह्म की शक्ति के रूप में देखा गया है. काल ही सृष्टि को जन्म देता है, उसका पालन करता है और अंततः उसका लय करता है. युग, मन्वंतर, कल्प और अहोरात्र जैसी अवधारणाएँ इस विशाल कालबोध का परिचय देती हैं. व्यक्ति के जीवन में तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण के माध्यम से काल का सूक्ष्म प्रभाव देखा जाता है. यह मान्यता कि प्रत्येक क्षण अपनी एक विशिष्ट गुणवत्ता और ऊर्जा लेकर आता है, ज्योतिष को अत्यंत सूक्ष्म और संवेदनशील शास्त्र बनाती है. इसी आंतरिक कालबोध से मुहूर्त शास्त्र का जन्म हुआ, जिसमें यह विश्वास निहित है कि सही समय पर किया गया कार्य ब्रह्मांडीय व्यवस्था के अनुकूल होने के कारण सहज रूप से फलदायी होता है.

कर्म सिद्धांत भारतीय ज्योतिष के आंतरिक संसार की आत्मा है. भारतीय दर्शन में कर्म को केवल क्रिया नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक नियम माना गया है. प्रत्येक कर्म का फल निश्चित है, किंतु उसका फलित होना काल और परिस्थितियों पर निर्भर करता है. ज्योतिष इसी कर्मफल सिद्धांत को ग्रहों और दशाओं के माध्यम से व्यक्त करता है. जन्मकुंडली को पूर्व जन्मों के संचित कर्मों का प्रतिरूप माना जाता है, जबकि दशाएँ और गोचर प्रारब्ध कर्मों के फलित होने का संकेत देते हैं. इस दृष्टि से ज्योतिष नियतिवादी नहीं है, बल्कि यह बताता है कि किन परिस्थितियों में व्यक्ति को अधिक सावधानी, धैर्य या प्रयास की आवश्यकता है. पुरुषार्थ की भूमिका को यहाँ कभी नकारा नहीं गया, बल्कि उसे कर्म के साथ संतुलित किया गया है.

भारतीय ज्योतिष का आंतरिक संसार मनोविज्ञान से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है. आधुनिक मनोविज्ञान के विकास से बहुत पहले, भारतीय ज्योतिष ने मानव मन की प्रवृत्तियों, भावनाओं और व्यवहार को समझने का प्रयास किया. चंद्रमा को मन का कारक मानना, लग्न को व्यक्तित्व की आधारशिला समझना और भावों के माध्यम से जीवन के विभिन्न मानसिक क्षेत्रों का विश्लेषण करना यह सब दर्शाता है कि ज्योतिष व्यक्ति के आंतरिक मनोभावों को समझने की एक प्राचीन प्रणाली है. कुंडली के माध्यम से व्यक्ति की आशंकाएँ, आकांक्षाएँ, भय, आत्मविश्वास और संवेदनशीलता को देखा जाता है. इस प्रकार ज्योतिष केवल घटनाओं का पूर्वानुमान नहीं करता, बल्कि व्यक्ति को स्वयं को समझने का अवसर भी प्रदान करता है.

आध्यात्मिक दृष्टि से भारतीय ज्योतिष का आंतरिक संसार अत्यंत समृद्ध है. यहाँ जीवन को केवल भौतिक उपलब्धियों की यात्रा नहीं माना गया, बल्कि आत्मा की परिपक्वता और मोक्ष की ओर अग्रसर होने की प्रक्रिया समझा गया है. ग्रहों से उत्पन्न सुख-दुःख को आत्मिक विकास के साधन के रूप में देखा गया. शनि के कष्ट जीवन में अनुशासन और वैराग्य लाते हैं, राहु भ्रम और मोह के माध्यम से विवेक को परखता है, और केतु वैराग्य तथा आत्मचिंतन की ओर प्रेरित करता है. इस प्रकार ज्योतिष व्यक्ति को यह सिखाता है कि जीवन की कठिनाइयाँ भी आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं.

मकर संक्रांति खिचड़ी, पोंगल और बिहू की धूम

सूर्य देव की आराधना और सामाजिक उत्सव का संगम

मकर संक्रांति भारत का एक ऐसा त्योहार है, जिसे हर राज्य अपनी परंपरा के अनुसार मनाता है. उत्तर भारत में इसे खिचड़ी पर्व कहा जाता है, दक्षिण में पोंगल, पूर्वोत्तर में माघ बिहू और पंजाब में लोहड़ी का उत्सव मनाया जाता है. यह पर्व न केवल सूर्य देव की आराधना का अवसर है बल्कि सामाजिक मेलजोल और कृषि की समृद्धि का प्रतीक भी है. मकर संक्रांति सूर्य देव के मकर राशि में प्रवेश के साथ शुरू होने वाला पर्व है.

उत्तरायण के इस समय से शुभ कार्यों की शुरुआत होती है. उत्तर भारत में खिचड़ी पर्व में चावल और उड़द दाल की खिचड़ी बनाकर भगवान को भोग लगाना और नदियों में स्नान करना प्रमुख परंपरा है. ब्राह्मणों को तिल, गुड़ और कंबल दान में देने का भी धार्मिक महत्व है. दक्षिण भारत में पोंगल उत्सव चार दिनों तक चलता है. इस दौरान किसान नई फसल का धन्यवाद करते हैं और मिट्टी के बर्तन में दूध और चावल से पोंगल पकाते हैं. पशुओं की पूजा और सजावट भी इस पर्व का हिस्सा है. पंजाब में लोहड़ी मनाई जाती है, जिसमें आग जलाकर तिल, मक्का और मूंगफली अर्पित की जाती हैं और ढोल की थाप पर भांगड़ा और गिद्धा किया जाता है. गुजरात में इसे उत्तरायण कहा जाता है, और आसमान रंग-बिरंगी पतंगों से भर जाता है. असम में माघ बिहू के रूप में सामूहिक भोज और पारंपरिक नृत्य होते हैं.

कर्नाटक में सुग्गी हब्बा और केरल में मकरविलक्कू के रूप में यह पर्व मनाया जाता है. यह त्योहार न केवल धार्मिक महत्व बल्कि सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी है.

पूजा में कपूर जलाने के स्वास्थ्य लाभ

कपूर जलाने की परंपरा भारतीय घरों में सदियों से चली आ रही है. केवल धार्मिक विश्वास ही नहीं, आधुनिक विज्ञान भी इसके स्वास्थ्य और मानसिक लाभ को मानता है. कपूर का धुआँ हवा को शुद्ध करता है, मानसिक तनाव कम करता है और ध्यान-योग में मन को स्थिर करता है. इसके अलावा यह प्राकृतिक रोगाणुनाशक की तरह कार्य करता है और घर में हानिकारक कीट-पतंगों को दूर भगाता है. कपूर का उपयोग पूजा में केवल धार्मिक उद्देश्य से नहीं किया जाता, बल्कि यह स्वास्थ्य और मानसिक शांति के लिए भी लाभकारी है.

न्यूरोसाइंस के अनुसार, कपूर की सुगंध हमारे मस्तिष्क के लिम्बिक सिस्टम से सीधे जुड़ी होती है, जो भावनाओं, स्मृति और मानसिक तनाव को नियंत्रित करती है. योग और ध्यान के समय कपूर का धुआँ मन को स्थिर करने में मदद करता है. इसके अलावा, कपूर जलाने से निकलने वाला धुआँ हवा में मौजूद हानिकारक बैक्टीरिया और छोटे वायरस को नष्ट करता है. घर में जहां हवा का संचार कम होता है, वहां यह प्राकृतिक एयर प्यूरीफायर की तरह कार्य करता है. कपूर की सुगंध कीट-पतंगों और मच्छरों को भी दूर भगाती है. त्वचा और शारीरिक लाभ भी अद्भुत हैं. नारियल तेल में मिलाकर लगाने से खुजली और फंगल इन्फेक्शन में आराम मिलता है. जोड़ों के दर्द में तेल की मालिश सूजन को कम करती है. श्वसन तंत्र की बाधाओं को दूर करने और बंद नाक खोलने में भी कपूर लाभकारी है. यह तन और मन दोनों को नई ऊर्जा देता है.कपूर जलाने की परंपरा सदियों से भारतीय घरों में चली आ रही है. इसका महत्व सिर्फ पूजा तक सीमित नहीं है. न्यूरोसाइंस के अनुसार कपूर की खुशबू लिम्बिक सिस्टम से जुड़कर भावनाओं और मानसिक तनाव को नियंत्रित करती है.

दक्षिण दिशा में मुंह करके ना करें भोजन, हो जाएंगे कंगाल

वास्तु शास्त्र में ऊर्जा और दिशाओं का विशेष महत्व होता है. वास्तु में हर कार्य के लिए शुभ दिशाओं की जानकारी दी गई है. वास्तु में भोजन करने की भी दिशा से जुड़े खास नियम बताए गए हैं. वास्तु के इन नियमों का पालन ना करने से घर में कंगाली आती है. आइए जानते हैं भोजन से जुड़े वास्तु के इन नियमों के बारे में.

वास्तु शास्त्र के अनुसार खाना खाते समय दिशाओं का ध्यान रखना बहुत जरूरी है.वास्तु के अनुसार खाना खाने के लिए सबसे अच्छी दिशा उत्तर और पूर्व दिशा को माना गया है. वहीं दक्षिण को खाना खाने के लिए सबसे अशुभ दिशा माना गया है. दक्षिण की दिशा यम की मानी जाती है. वास्तु के अनुसार इस दिशा में खाना खाने से व्यक्ति की उम्र घटती है और दुर्भाग्य भी बढ़ता है.

वास्तु में खाना खाने के लिए पश्चिम दिशा भी अशुभ मानी गई है. माना जाता है कि पश्चिम दिशा में मुंह करके भोजन करने से व्यक्ति पर कर्ज बढ़ता है. इस दिशा में मुंह करके खाना खाने से घर में कंगाली आती है.

भोजन हमेशा पूर्व या फिर उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके करना चाहिए. यह दोनों देव की दिशाएं मानी जाती हैं. माना जाता है कि इन दिशाओं की ओर मुंह करके भोजन करने से घर में मां लक्ष्मी का वास होता है और सेहत भी अच्छी रहती है.

वास्तु के अनुसार कभी भी जूते पहनकर या सिर ढककर खाना नहीं खाना चाहिए. ऐसा करने से भोजन का अपमान होता है. वहीं बिस्तर पर बैठकर खाना खाने से मां लक्ष्मी नाराज होती हैं. इससे घर में धन का अभाव होता है. वास्तु शास्त्र में बताया गया है कि भोजन हमेशा नहा कर करना चाहिए. हमेशा स्नान करने के बाद साफ-सुथरे कपड़े पहनकर ही भोजन करना चाहिए.

वास्तु में खाना खाने की सबसे अच्छी जगह रसोई घर या उसके आसपास की जगह बताई गई है. भोजन ऐसी जगह करना चाहिए जहां प्राकृतिक प्रकाश और शुद्ध वायु आती रहे. थाली में उतना ही भोजन लें जितना आपको खाना हो. झूठा भोजन छोड़ना अन्न का अपमान माना जाता है. इससे घर में धन और अन्न की कमी होने लगती है.

मकर संक्रांति पर एकादशी का दुर्लभ योग

14 जनवरी का महापुण्यकाल और विशेष पूजा विधि

पूजा विधि में ब्रह्म मुहूर्त में काले तिल मिलाकर जल में स्नान करना, तांबे के लोटे से सूर्य देव को अर्घ्य देना और ऊं सूर्याय नमः मंत्र का जाप करना शामिल है. एकादशी होने के कारण भगवान विष्णु को तिल और गुड़ का भोग लगाना शुभ है. इस दिन अन्न, घी, फल और हरी सब्जियों का दान करने से अनंत पुण्य प्राप्त होता है और स्वास्थ्य और समृद्धि की प्राप्ति होती है.

साल 2026 की मकर संक्रांति धार्मिक और ज्योतिषीय दृष्टि से बेहद खास है. 14 जनवरी को सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करेंगे और संक्रांति के साथ षटतिला एकादशी का अनोखा योग बनेगा. इस दिन पुण्यकाल, महापुण्यकाल और स्नान-दान का समय अत्यंत फलदायी माना जाता है. श्रद्धालु सूर्य देव और भगवान विष्णु की विशेष पूजा कर सकते हैं और तिल, गुड़ व अन्न का दान कर अक्षय पुण्य अर्जित कर सकते हैं.

मकर संक्रांति 2026 का त्योहार इस बार 14 जनवरी को मनाया जाएगा. सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करके उत्तरायण आरंभ करेंगे. मकर संक्रांति 2026 का त्योहार ज्योतिष और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत शुभ माना जा रहा है. इस बार संक्रांति 14 जनवरी को मनाई जाएगी, जब सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करेंगे और उत्तरायण आरंभ होगा. करीब 23 साल बाद यह संयोग बन रहा है कि मकर संक्रांति पर षटतिला एकादशी भी पड़ रही है. यह दुर्लभ संगम इसे और अधिक महत्व प्रदान करता है. इस अवसर पर षटतिला एकादशी का दुर्लभ संयोग बन रहा है, जो पिछली बार 2003 में देखने को मिला था. इस कारण धार्मिक महत्व और बढ़ गया है. इस दिन सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि जैसे शुभ योग बन रहे हैं.

पुण्यकाल दोपहर 03-04 बजे से शाम 05-57 बजे तक रहेगा और महापुण्यकाल दोपहर 03-04 से 03-28 बजे तक रहेगा. स्नान और दान का समय सुबह 09-03 से 10-48 बजे तक उत्तम है. पूजा विधि में ब्रह्म मुहूर्त में काले तिल मिलाकर जल में स्नान करना, तांबे के लोटे से सूर्य देव को अर्घ्य देना और ऊं सूर्याय नमः मंत्र का जाप करना शामिल है. एकादशी होने के कारण भगवान विष्णु को तिल और गुड़ का भोग लगाना शुभ है. इस दिन अन्न, घी, फल और हरी सब्जियों का दान करने से अनंत पुण्य प्राप्त होता है और स्वास्थ्य और समृद्धि की प्राप्ति होती है.

घर में खुशहाली लाता है लाफिंग बुद्धा

लाफिंग बुद्धा को आप बाजार में कई रूपों में देख सकते है जैसे-हँसता हुआ,बैठा हुआ,दोनों हाथ ऊपर किए या कंधे पर धन की पोटली लिए आदि.आप कौनसे बुद्धा को किस जगह रखें जिससे आपको अपेक्षित लाभ प्राप्त हो सके फेंगशुई शास्त्र के अनुसार लाफिंग बुद्धा हमारे घर में रखना शुभ माना जाता हैं. ऐसा माना जाता है कि लाफिंग बुद्धा हमारे घर में रखने से हमारे घर में हमेशा के लिए सुख शांति बनी रहती हैं वहीं घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार बना रहता हैं. लाफिंग बुद्धा को घर में रखने से हमें सफलता की प्राप्ति होती हैं व हमारी आर्थिक स्थिति मजबूत बनती हैं.

माना जाता है कि घर में रखा हुआ लाफिंग बुद्धा घर-परिवार पर कोई विपत्ति नहीं आने देता है. लाफिंग बुद्धा को आप बाजार में कई रूपों में देख सकते है जैसे-हँसता हुआ,बैठा हुआ,दोनों हाथ ऊपर किए या कंधे पर धन की पोटली लिए आदि. लाफिंग बुद्धा को घर या दफ्तर में जहां भी रखें इस बात का ध्यान रखें कि उसकी ऊंचाई आपकी आंखों के बराबर तक हो ताकि आते आते आपकी सीधी नजर उस पर पड़े.अधिक ऊंचाई या नीचे जमीन पर इन्हें नहीं रखना चाहिए.

राशिफल

दिनांक- 11 से 17 जनवरी 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य धनु राशि में, ता. 14 को 9 .48 रात से मकर राशि में, मंगल धनु राशि में ता. 15 को 4 .1 रातअंत से मकर राशि में, बुध धनु राशि में ता. 17 को 10 .09 दिन से मकर राशि में, वक्री गुरू मिथुन राशि में, शुक्र धनु राशि में ता. 12 को 3 .18 रात से मकर राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा कन्या तुला वृश्चिक और धनु राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 12 को शुक्र, ता. 14 को सूर्य, ता. 15 को मंगल और ता. 17 को बुध मकर राशि में आने से गुड, खांड, तेल, घी, गेहूं, चना आदि अनाज, रूई, सोना, चांदी, तांबा में तेजी से लाभ मिलेगा. ता. 17 के बाद अनाज के भाव में कमी आ सकती है.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	11 जनवरी को	लाल बहादुर शास्त्री पुण्य तिथि,
सोमवार	12 जनवरी को	स्वामी विवेकानंद जयंती, महर्षि महेश योगी जयंती, राष्ट्रीय युवा दिवस, भीष्म पितामह जयंती,
मंगलवार	13 जनवरी को	लोहडी उत्सव,
बुधवार मकर	14 जनवरी को	खरमास समाप्त, षटतिला एकादशी व्रत, संक्रांति, बरमान मेला, पोंगल
गुरूवार	15 जनवरी को	तिल द्वादशी, प्रदोष व्रत, शिवचर्तुदशी व्रत, सौर माघ मास प्रारम्भ

मेष

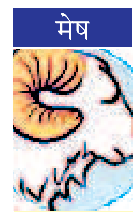

आप अत्याधिक खर्च से चिंतित रह सकते हैं, इसके बाद भी आप अपने प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील बने रहेंगे. आपको अधिनस्थ की उपेक्षा का शिकार होना पड़ेगा. दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता रहेगी. नये लोगों से मेलजोल बढ़ेगा. भूमि, भवन, प्रापर्टी में खर्च होगा. नये कार्यो पर विचार होगा. इसके लिये किसी का सहयोग या बैंक से लोन लेना पड़ सकता है.

वृषभ

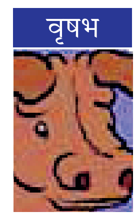

आपकी जान पहचान और परिचय का दायरा बढ़ेगा. अच्छा हो आप सामाजिक कार्यो की उपयोगिता को ध्यान में रखकर कार्य करें, पैतृक संपत्ति को बेचकर अपना हिस्सा ले सकते हैं. आप अपने निकट परिजनों के साथ दूर दराज की यात्रा का विचार करेंगे, जोखिम के कार्यो में रूचि रहेगीं आप वित्तीय मामलों में किसी का सहयोग लेंगे, जो उल्लेखनीय रहेगा.

मिथुन

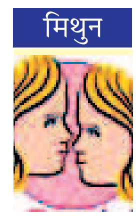

हंसी खुशी का वातावरण रहेगा. आपकी नौकरी की तलाश खत्म हो सकती है. पेशेवर लोगों को वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, कारोबारी यात्राओं की अधिकता रहेगी. जल्द ही किसी बड़ी योजना को हाथ में ले सकते हैं. अपने व्यवहार और लगन का प्रयोग कर कार्यक्षेत्र में विस्तार कर सकते है. बीती बातों को याद करने से निजी संबंधों में कटुता आयेगी.

कर्क

इस सप्ताह पुराना अटका धन मिलने के आसार हैं, अपने कार्यो के प्रति आप आशावादी बने रहेंगे. कई उतार चढ़ाव आयेंगे. व्यवसायिक फैसला लेने से पहले आप हर पहलू पर विचार करेंगे. घर परिवार में सुख शांति मिलेगी. पारिवारिक कार्यक्रमों में धन खर्च अधिक होगा. संबंधों के विस्तार पर ध्यान जा सकता है, और लोग प्रसन्न होकर आपसे मिलेंगे.

सिंह

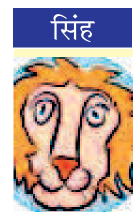

आप मुश्किलों का डटकर मुकाबला करेंगे, नौकरी पेशा लोग अपने पद और आमदानी से संतुष्ट रहेंगे, यदि आप रचनात्मक क्षेत्र में हैं, तो और धन की प्राप्ति होगी. जीवनसाथी के साथ आप धार्मिक यात्रा में जा सकते है. जधनु जायजाद से जुड़े मुकदमें में फैसला आपके पक्ष में होगा. अति आत्म विश्वास से कोई फैसला न लें, कार्यस्थल पर समस्या सुलझ सकती है.

कन्या

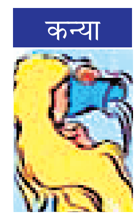

आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे, अपनी मेहनत और लगन के बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफल रहेंगे, कार्यक्षेत्र में क्रियाशील रहेंगे. खुले मन मस्तिष्क से समस्या का हल निकालेंगे. आप किसी नये अनुबंध में शामिल हो सकते हैं, जिससे मान सम्मान में प्रगति होगी, आप जिस पर अधिक भरोसा करते हैं, वही आपकी जड़ खोदने का प्रयास करेगा.

तुला

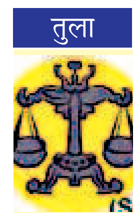

स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने की आशा है, उधार लेनदेन से बचने का प्रयास करें, जल्दबाजी में लिये गये निर्णय बदलने पड़ सकते हैं, आयात निर्यात का प्रस्ताव मिलेगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी, साझेदारी में संदेह आ जाने के कारण चल रहा कार्य बीच में ही छोड़ना पड़ सकता है. सावधानी बांछनीय है, बिना मांगे सलाह देना नुकसानदायक हो सकता है.

वृश्चिक

आपको नई नौकरी या नया कारोबार मिल सकता है, व्यापार के सिलसिले में यात्रा का योग बन रहा है, आपको करीबी रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा, बिखरे कार्य समेटने का प्रयास सफल होगा. संपत्ति के कार्यो में खर्च होगा. जानबूझकर की गई गलती की क्षमा मांगने में ही हित रहेगा. सप्ताहान्त में पारिवारिक सुखद योजना पर विचार होगा. वाहन चलाने में चोट लग सकती है.

धनु

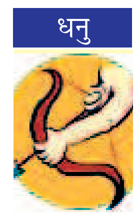

आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, कड़ी मेहनत करने पर ही सफलता मिलेगी, आप मानसिक अवसाद में रहेंगे, किसी विवाद के चलते आप के मन में नकारात्मक विचार आते रहेंगे, परिवार में अविश्वासी लोगों की सलाह से बचें, धार्मिक यात्रा की रूपरेखा बनेगी. पूज्य व्यक्ति की सलाह एवं अधिनस्थों का सहयोग आपको लाभकारी रहेगा.

मकर

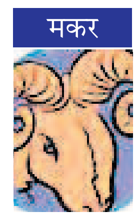

प्रतिस्पर्धा के दौर में किस्मत एवं मेहनत आपको भरपूर लाभ देगी, आपकी मनोकामना पूरी होगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. दाम्पत्य जीवन में तनाव की संभावना है. भाईयों के बीच जधनु जायजाद का बटवारा हो सकता है, वाद विवाद से दूर रहें. अटके कार्य पूरे होंगे. व्यापारिक यात्रा के अच्छे परिणाम मिलेंगे. भावनात्मक संबंधों की मजबूती आपको आंतरिक खुशी देगी.

कुम्भ

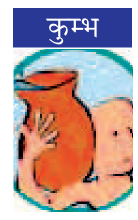

आप खुशी के समाचार सुनेंगे, परिवार की सुख सुविधाओं का ध्यान रखें, आयात निर्यात के बड़े व्यवसाय में लाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेंगे. प्रापर्टी संबंधी विवाद हल होगा. सप्ताह के अन्त में आपके निकटस्थ विरोधी नई मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं, शीघ्र समाधान होगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी हो सकती है.

मीन

आपकी महत्वाकांक्षा चरमसीमा पर रहेगी, अनहोनी का भय रहेगा. आप भविष्य की योजना बनायेंगे. अचानक लाभ का योग है. यात्रायें आशाजनक रहेंगी, किन्तु उठाईगीरों से सावधानी रखें. रोगी के कार्यो में खर्च होगा. कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी. पारिवारिक जीवन में वक्त देकर खुशी मिलेगी, दूसरों की सलाह पर ध्यान दें.